हिन्दी साहित्य में रोमन लिपि का प्रयोग

डॉ. वत्सला
सह-आचार्य (संस्कृत)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड़

आज समाज में हिन्दी लिखने के लिए देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि अपना स्थान बनाती जा रही है। इस लेखन शैली से शनैः-शनैः देवनागरी लिपि के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न उपस्थित होने लगेगा। सम्प्रति इस प्रश्न पर विमर्श आवश्यक है। जब से भाषा बनीं तब से हर भाषा की अपनी लिपि है। सभी जानते हैं हिन्दी की लिपि देवनागरी है। इसे नागरी लिपि भी कहते हैं। यह लिपि सरल, सुन्दर, सुग्राह्य और सुपाठ्य भी है। पहले संस्कृत भाषा की लिपि ब्राह्मी थी, किन्तु कालांतर में देवनागरी ही संस्कृत भाषा की लिपि हो गई। देवनागरी लिपि हिन्दी के अलावा मराठी, कोंकणी, सिन्धी, भोजपुरी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, डोगरी, मागधी आदि भाषाओं की भी लिपि है। अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन है। रोमन लिपि में यूरोप की लगभग सभी भाषाएं लिखी जाती है जैसे - जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, इतालवी, डच, स्वीडिश, पुर्तगाली आदि। इन भाषाओं में अतिरिक्त चिह्न का प्रयोग किया जाता है किन्तु अंग्रेजों में किसी चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता है।

रोमन लिपि को अंग्रेजों ने अपनी भाषा लिखने के लिए लातिनी भाषा से लिया। यह लिपि अंग्रेजी भाषा की लिपि नहीं है। दोनों भाषाओं की लिपियों में पार्थक्य भी दृष्टिगत होता है। देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजन के बीच का स्पष्ट अंतर पाया जाता है, किन्तु रोमन लिपि में यह अंतर स्पष्ट नहीं हो पाता है। इसीलिए देवनागरी लिपि रोमन की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है। देवनागरी लिपि में लिखने व बोलने में समानता है किन्तु रोमन लिपि में ऐसा नहीं है। रोमन लिपि में लिखी जाने वाली अंग्रेजी भाषा के उच्चारण में बहुत अधिक असमानता पायी जाती है जैसे- उच्चारण वन (Van) होता है और लिखा one जाता है। रोमन लिपि में छब्बीस (26) वर्ण हैं जिसमें पाँच स्वर तथा इक्कीस (21) व्यंजन हैं। हिन्दी में उनचास (49) वर्ण थे पहले और बाद में आधुनिक हिन्दी में वर्णों की संख्या बावन (52) हो गई हैं जिनमें ग्यारह (11) स्वर है। देवनागरी में अनुस्वार (°), ह्रस्व, विसर्ग (:), अनुनासिक के लिए संकेत (चिह्न) हैं किन्तु रोमन लिपि में ऐसा नहीं है।

भाषा निर्धारित चिह्नों के प्रयोग से आपसी संवाद, अभिव्यक्ति सम्प्रेषण को सम्भव बनाती है। भाषा अभिव्यक्ति

का जीवनधायक तत्त्व है। ध्वनि से शब्दों का निर्माण होता है और लिपि, चिह्न की ऐसी व्यवस्था है जो ध्वनि का स्थान ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार लिपि से ही भाषा का मूर्त स्वरूप बनता है और वाचक को वाचन की व्यवस्था मिलती है। लिपि भाषा की अभिव्यक्ति का लिखित माध्यम है। भाषा की अक्षुण्णता के लिए लिपि अनिवार्य होती है। हमें यह ज्ञात है कि जिन भाषाओं की लिपि नहीं थी वे भाषाएं समाप्त हो गयी। लिपि के माध्यम से भाषा क अधिगम किया जाता है। छोटे शिशु को लिपि के माध्यम से ही भाषा का ज्ञान सिखाया जाता है।

हमारे देश में अंग्रेजी भाषा के आधिपत्य को स्थापित करना अंग्रेजों की सोची समझी योजना थीं। स्वतंत्रता से पूर्व भारत में ब्रिटिशों का उपनिवेशवाद था। अंग्रजों ने अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए भारतीय शिक्षा पद्धति व संस्कृति पर प्रहार किया। उन्होंने हमारी शिक्षा व्यवस्था व संस्कृति को पिछड़ी व अनुपयोगी बनाने का प्रयास किया। उन्होंने ऐसी शिक्षा व्यवस्था व संस्कृति के निर्माण का प्रयास किया । जो हो तो भारतीय किन्तु मन- मस्तिष्क से अंग्रेजियत की भक्ति करने वाला हो। एतदर्थ 1835 में मैकाले ने संस्कृत के स्थान पर अंग्रेजी को राजभाषा पद पर स्थापित किया। मैकाले की शिक्षानीति का मुख्य उद्देश्य संस्कृत, पालि, प्राकृत व फारसी भाषा के वर्चस्व को तोड़ कर अंग्रेजी भाषा के आधिपत्य को स्थापित करना था। यद्यपि इसका प्रबल विरोध भी हुआ किन्तु मैकाले अपनी इस नीति में सफल हो गया। राजकाज की भाषा अंग्रेजी बना दी गयी।

अब अंग्रेजी को पढ़ना अंग्रेजी शासन की अनिवार्यता बन गयी। किन्तु भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अंग्रेज चले गए किन्तु भारतीय जन मानस के सिर से अंग्रेजियत नहीं गयी। भारत में अंग्रेजी भाषा का जुनून लोगों के सिर पर आजतक चढ़ा हुआ है। स्थिति यह हुई कि अंग्रेजी पढ़ना आधुनिकता का पर्याय बन गया। दीर्घकालिक संघर्ष के बाद 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया। फिर भी आज भारत के हर गली-मोहल्ले में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय गाजर घास की तरह खुल गए हैं और हर व्यक्ति अपने बच्चे को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में ही पढ़ाना चाहता है। इस अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खुलने और शिक्षा ग्रहण करने का परिणाम यह हुआ कि इन स्कूल के बच्चों को हिन्दी की गिनती व पहाड़ा न लिखने न पढ़ने आता है।

ये हिन्दी की मात्राओं का सही प्रयोग भी नहीं कर पाते हैं। इन अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अध्ययन करने वाले बच्चे का वाचिक स्तर हिंग्लिश हो गया हैं। अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थी आज अंग्रेजी भाषा को व्याकरण की दृष्टि से न शुद्ध लिख पाते हैं, ना वे अंग्रेजी भाषा को अंग्रेजी लिखने के लिए प्रयुक्त करते हैं, बल्कि वे अंग्रेजी भाषा की रोमन लिपि का प्रयोग अंग्रेजी भाषा को लिखने के स्थान पर हिन्दी भाषा को लिखने में कर रहे हैं। यह प्रचलन दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। आजकल के युवाओं में इसका चलन काफी बढ़ रहा है। महाविद्यालय,

विश्वविद्यालय व कारपोरेट सेक्टर में नौकरी करने वाले युवाओं में हिन्दी को रोमन लिपि में लिखने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही हैं। आजकल फिल्मों व नाटकों के स्क्रिप्ट (कथानक), नेताओं के भाषण यथा - सोनिया व प्रियंका गांधी, उच्चाधिकारियों के सम्बोधन अभिभाषण आदि में लिखे जाने वाले वक्तव्य रोमन लिपि में लिखे जा रहे हैं। ऐसा प्रयोग आने वाले समय में देवनागरी लिपि के लिए खतरनाक संकेत है।

सोशल मीडिया (सामाजिक जनसंचार) के सभी माध्यम (पोर्टल, एप) पर यथा- वाट्स एप, फेसबुक, मैसेन्जर, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, ट्यूटर, ब्लाग आदि पर रोमन लिपि में हिन्दी लिखी जा रही है। मोबाइल पर सर्वाधिक रोमन लिपि में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है यथा- 'बहुत ही शानदार' इस हिन्दी वाक्य को लोग रोमन में 'Bahut hi shandar' इस प्रकार से लिख रहे हैं।कम्प्यूटर, लैपटॉप, टेबलेट, मोबाइल के की-बोर्ड पर आज ऐसे एप, सॉफ्टवेयर की सुविधा उपलब्ध है कि यदि हम रोमन लिपि में हिन्दी लिख रहे हैं और उसको देवनागरी लिपि में लिखना चाहते हैं, तो बड़ी सहजता से उसका लिप्यन्तरण हो जाता है। इसी प्रकार यदि देवनागरी लिपि में हम लिख रहे है और उसका लिप्यन्तरण रोमन लिपि में करना चाहते हैं, तो वह बड़ी सुगमता से हो जाता है। कुछ लोगों का ऐसा कहना है कि जो लोग हिन्दी भाषा को देवनागरी लिपि में लिख व पढ नहीं सकते हैं, यदि वे रोमन लिपि में लिखी हिन्दी को पढ़ व समझ सकते हैं तो इस रोमन लिपि से हिन्दी का विस्तार होगा।

कुछ लोग ऐसा तर्क भी समुपस्थापित करते हैं कि रोमन में लिखने से हिन्दी आसान हो जाएगी और इसकी पकड़ अधिक लोगों तक हो जाएगी। जैसे यदि हम किसी ऐसे व्यक्ति से संवाद करते हैं, जिसे हिन्दी भाषा तो आती है लेकिन पढ़नी नहीं आती है, तो उससे रोमन लिपि द्वारा वार्ता किया जा सकता है। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि कम्प्यूटर, इंटरनेट में रोमन लिपि में हिन्दी लिखने में आसानी होती है। देवनागरी लिपि में लिखने में समय अधिक लगता है। देवनागरी में टाइप करना कठिन भी है। किन्तु रोमन लिपि में मोबाइल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट पर लिखना सरल है। इसलिए रोमन लिपि में हिन्दी लिखने से हिन्दी का प्रचार तेजी से होगा। लेकिन इस प्रयोग को बढ़ावा देने से इस परिवर्तन से कुछ दिनों में निजात पाना असम्भव हो जाएगा। हिन्दी भाषा को ऐसे प्रयोग से बचाना है तो हिन्दीभाषियों का कर्त्तव्य है कि हिन्दी का बहुलता से प्रयोग करें।

आज देवनागरी कम्प्यूटर के लिए उपयुक्त सिद्ध हो गई है और इसका प्रयोग इन्टरनेट, लैपटॉप, मोबाइल में सर्वाधिक विवर्धित होता जा रहा है। माइक्रोसॉफ्ट के जनक, अमेरिकी निवासी बिल गेट्स ने अधिकारिक रूप से यह कहा है कि संस्कृत कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा और इसकी देवनागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। इस लिपि में लिखी जाने वाली संस्कृत व हिन्दी भाषाएँ सर्वाधिक तार्किक और तथ्यपरक भाषाएँ हैं।

भाषा का सौंदर्य उसके शब्दों के साथ उसकी लिपि में भी निहित होता है। यदि हम अंग्रेजी भाषा को देवनागरी में लिखे जैसा कई बार लिखा जाता है संस्थाओं के नाम जिसका हिन्दी प्रारूप ज्ञात नहीं होता है तो उनके नाम अंग्रेजी में होते हुए देवनागरी में लिख जाते हैं यथा - इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी । कई अंग्रेजी तकनीकी के शब्द भी यथावत् देवनागरी में लिखना सुगम होता है। तकनीकी से जुड़े कई शब्द यथा- कम्प्यूटर, माउस, हैंग हो जाना, प्रिंटर, इनबॉक्स, डाउनलोड, अपलोड, डेस्क टाप, एप्लिकेशन, फोल्डर, स्क्रीन आदि शब्द ऐसे हैं, जिन्हें हम देवनागरी में लिखते हैं। लेकिन देवनागरी लिपि में अंग्रेजी भाषा को लिखना सुगम नहीं होता है क्योंकि अंग्रेजी भाषा में उच्चारण कुछ होता है और लिखा कुछ जाता है। अतिशीघ्र समझ नहीं आता । जबकि देवनागरी में जैसा हम बोलते व सुनते हैं, वैसा ही लिखते हैं। किसी भाषा को उसकी लिपि में न लिख कर किसी और भाषा में लिखा जाए तो यह औचित्यपूर्ण नहीं है।

यूरोप के देश जापान, चीन, फ्रांस, जर्मनी, वियतनाम, पोलैंड आदि सभी अपनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क की भाषा है, लेकिन ये देश अंग्रेजी का प्रयोग अपनी भाषा के लिए नहीं करते हैं।जापान, चीन, कोरिया तकनीकी के क्षेत्र में अग्रणी है, किन्तु ये अपनी ही भाषा जापानी व चीनी का ही प्रयोग करते हैं, किसी अन्य भाषा का नहीं। जबकि हमारे देश में 1979 से सभी प्रशासनिक सेवाओं में पहली बार अपनी भाषा हिन्दी में लिखने की छूट मिली उसके पहले केवल अंग्रेजी भाषा में लिखा जाता था। भाषा को समृद्ध करने की दृष्टि से हम किसी भी भाषा के शब्दों का प्रयोग सुगमता की दृष्टि से अपनी भाषा में कर सकते हैं। जैसा कि विख्यात हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर ने कहा था 'हिन्दी तब तक विकसित नहीं हो सकती जब तक कि अन्य भारतीय भाषाओं के साथ उसका गहरा सम्बंध नहीं होगा।' यदि हमें हिन्दी का प्रचार व विस्तार करना है तो निश्चित रूप से क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हमें तालमेल व सामञ्जस्य विकसित करना होगा। आज लोग ऐसा भी मानते हैं कि अंग्रेजी पढ़ने से रोजगार के अवसर अधिक उपलब्ध होंगे इसलिए लोगों की अभिरुचि अंग्रेजी भाषा के प्रति अधिक हो गई। अंग्रेजी जानने से उन्हें विदेशों में रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं, लेकिन हर भाषा व उसकी लिपि का महत्व उस देश के लिए सर्वोपरि होना चाहिए। भारत में तो राजकाज की भाषा हिन्दी है, अतएव हिन्दी भाषा का सर्वाधिक प्रयोग करना चाहिए।

यदि देवनागरी लिपि को इसी प्रकार रोमन लिपि में लिखने का क्रम अभिवर्धित होता रहा तो अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं पर भारत में संकट उपस्थित हो जाएगा। हिन्दी तो रोमन लिपि में लिखी जाने लगेगी और अंग्रेजी की केवल लिपि शेष रह जाएगी। दोनों भाषाओं के व्याकरण, लेखन, प्रयोग, उच्चारण परिवर्तित होने लगेंगे। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम समय रहते सचेत हो जाएँ और हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करें।